

What is Arya Samaj?

Arya Samaj is an institution founded by Maharishi Dayanand Saraswati based on the universal teachings of the Vedas. It is an organisation propagating universal message of the Vedas for the benefit of the entire humanity.

ARYAN VOICE

YEAR 38

3/2016-17

MONTHLY

March 2016

Dates for your diary (Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)

Rishi Bodh Utsav - Sunday 6th March 2016

11am – 1pm

Holi – Sunday 27th March 2016

11am – 1pm

Arya Samaj Foundation Day – Sunday 10th April 2016

11am – 1pm

Ram Navmi – Sunday 17th April 2016

11am-1pm

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS

(Charity Registration No. 1156785)

**188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,
BIRMINGHAM B7 4SA**

Tel: 0121 359 7727

E-mail– enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Drive Away our Nightmeres	4
देवयज्ञ (अग्निहोत्र / हवन) - विधि पर व्यावहारिक चिन्तन	
	आचार्य डॉ. उमेश यादव 6
Celebration of Republic Day of India	18
Matrimonial Advert	20
List of Festivals for year 2016	21
News (पारिवारिक समाचार)	22
Important	24

For General and Matrimonial Enquiries

Please Ring

Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)

Monday: - 1pm-5pm

Tuesday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,

Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.

Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

PLEASE NOTE WINTER HOURS MAY VARY DUE TO WEATHER.

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge,spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Drive Away our Nightmeres

**Dausvapnyam dourjiviyam raksa abhva marayyah I
durnaamnih sarva durvacasta asmannyami II**

Atharav Veda 7.23.1

Meaning in Text Order

Doushvapnyam = bad dreams

Dourjeevityam = disappointment in life

Rakshah = evil deeds

Abhvam = diseases

Araayyah = selfishness

Durnaamneeh = ill named

Sarvaah = all

Durvaachah = despicable speech

Taa = all these

Asmat = from us

Naashyaamasi = drive away

Meaning

O Lord! Drive away from us the tendencies to have bad dreams, disappointments in our life, evil deeds, diseases, selfishness and faults of speech..

Contemplation

This life is a gift of God and should be spent with honesty and integrity according to the codes of morality dictated by the Vedas and Ordinances. It is our misfortune that due to our own fault we make our life miserable. Now we have resolved that we will eradicate that have a constant effect on our mind. Sometimes in the deep sleep we go through bad dreams which make our life unpleasant. These dreams are of different types, sometimes they leave dreadful effect on our mind. Not only in the state of dream but also in a waking state, meditate upon bad thoughts.

These dreams and meditation of wrong thoughts leave diverse impressions on our mind. Secondly, we pick up bad habits. The third is that we become the victim of mental and physical diseases. These are hindrances on the path of progress and advancement. The fourth weakness is the tendency of selfishness. Being always selfish and keeping our own interest at the forefront. We ignore those who are needy and don't help them. Even those people who are in dire need are not helped even though we are in a position to help them.

The fifth are those actions which bring infamy to us yet we are unable to abandon them. The reason for this is that our mind takes in deep interest in them. The sixth is our bitter devilish speech. History is full of such incidents where, due to the evil speech, many unfavourable incidents took place. There are other such wicked tendencies that we are accustomed to, We will live a life without stain.

by Krishan Chopra

देवयज्ञ (अग्निहोत्र / हवन) - विधि पर व्यावहारिक चिन्तन
आचार्य डॉ. उमेश यादव

यह एक परोपकारमय श्रेष्ठ कर्म है । देवयज्ञ को ही अग्निहोत्र या हवन वा होम भी कहा जाता है । सामान्यतया “यज्ञ” शब्द हवन के लिये ही प्रयुक्त होता है पर यज्ञ शब्द का व्यापक अर्थ श्रेष्ठ कर्म है । जहाँ-जहाँ परोपकार, सेवा, समर्पण, जनहित, लोकहित आदि हो, वह यज्ञ कार्य का परिचायक है । इसके धात्वर्थ लें तो तीन मुख्य भाव स्वाभाविक रूप से निकलकर आते हैं- देवपूजा, संगतिकरण व दान । माता-पिता, गुरु/आचार्य/ऋषि आदि विद्वान्, ज्ञानेन्द्रियाँ, मन आदि अन्तःकरण, आत्मा व अन्य परोपकारी तत्त्व वा प्राणी “देव” की कोटि में आते हैं । परमात्मा देवों का देव महादेव है । यज्ञ-प्रकरण में इन सब का आदर, इनका समुचित प्रयोग, इनकी रक्षा तथा इनके विकास की अपूर्व प्रेरणा है और तदनुकूल क्रियायें भी हैं । यही देव-पूजा है । पूजा का सीधा अर्थ सत्कार व सत्प्रयोग है । यज्ञविधि में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना की जाती है जो देव-पूजा मान्य है । माता-पिता, आचार्य आदि का आदर व इनके ज्ञान व अनुभव का लाभ लिया जाता है, यह देव पूजा है । इसी प्रकार घी, सामग्री आदि अनेक पदार्थों के साथ और इनके माध्यम से अनेक प्राणी व पदार्थ से सम्बन्ध स्थापित होता है । घी चाहिये तो किसी को गाय पालना ही होगा । सामग्री के लिये अनेक औषधियों व सुगन्धित पदार्थों का चयन करना ही होगा । विद्वान् पुरोहित/आचार्य के विना यज्ञ/अग्निहोत्र की सम्पन्नता नहीं होगी । सब तरह के लोग यज्ञ-समारोह में उपस्थित होते हैं--इत्यादि प्रबन्धगत व्यवहार संगतिकरण ही तो है । इससे समभाव, प्रेम, सेवा, सहयोग व सद्व्यवहार का विकास होता है । दान= देना । विद्वान् विद्या का दान

देता है । यजमान सामग्री आदि की व्यवस्था में धन का धान करता है । अग्नि में डाली वस्तुयें जलकर भी सुगन्धि का दान करती हैं । इस प्रकार सब मिलकर यज्ञ/अग्निहोत्र करते हैं तो जगोपकर होता है । यज्ञ कार्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्र सभी एक दूजे को अपनी-अपनी योग्यता से सहयोग व सेवा देकर एक-दूजे के लिये वा यज्ञ की पूर्णता हेतु अपना समर्पण करते हैं ; मानो एक-दूजे का पोषण करते हैं; एक-दूजे की रक्षा करते हैं, वस , यज्ञ की यही उदात्त भावना है । ब्राह्मण को दक्षिणारूप धन, रक्षा व आदर अन्यों से मिलता है और अन्यों को ब्राह्मण से सुखमय जीवन हेतु सद् ज्ञानयुक्त मार्गदर्शन मिलता है । इसमें सब का शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उत्थान निश्चित ही निहित है ।

वातावरण की शुद्धि- अग्निहोत्र बढ़ाने को शुद्ध करने में अत्यन्त हितकारी है । अग्नि-होत्र में प्रयुक्त घी-सामग्री से सुगन्धि बढ़ती है जो वातावरण में फैली दुर्गन्धि को दूर कर सब के सुखपूर्वक निरोग रहने के अनुकूल वातावरण तैयार करती है । यह एक बड़ा जगोपकार है । हवन की सुगन्धि वातावरण में फैले हानिकारक बैक्टेरिया, वायरस आदि किटाणुओं को मारकर वातावरण को स्वच्छ बनाती है । यह समय पर वर्षा हो और जलवायु संतुलित रहे, इसमें भी मदद करती है । इसके विधिवत् प्रयोग से आधुनिक ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में भी सहायक सिद्ध है । आवश्यकता है कि प्रतिदिन घर-घर यज्ञ-होम करने की । आज इसका अभाव है । वृक्ष-वनस्पति भी कम ही हैं । मोटर गाड़ियों का भरमार है । अन्यथा भी सर्वत्र हवा, जल, आकास, ध्वनि आदि में प्रदूषण फैलाने के कारण-कार्य कम नहीं हैं । यह अग्नि-होत्र का विधिवत् नियमन सब प्रकार के प्रदूषण को दूर करने में सहायक है ।

वैयक्तिक व सामाजिक/सामुहिक शुद्धि- यज्ञ-होम में वार-वार प्रयुक्त होने वाले एक पद के भावों को जरा समझें । “स्वाहा” और “इदन्न मम” । स्वाहा=स्व+आहा अर्थात् यह स्वयं की सच्ची अभिव्यक्ति है कि इस श्रेष्ठ कर्म में सम्मिलित होने वाले सब दिशाओं में बैठे याज्ञिक चाहे यजमान हो या पुरोहित / ब्रह्मा, उद्गाता हो या अध्वर्यु सारे ही लोग स्वाहा शब्द का उच्चारण करते हैं; इससे मानो वे अपने पवित्र हृदय के पवित्र भाव उद्गल रहे कि यह उनकी सत्य अभिव्यक्ति है । क्या है वह ? वह है-इदन्न मम । अर्थात् यह मेरा या मेरे लिये नहीं है अपितु मेरे सिवाय यहाँ बैठे या नहीं भी बैठे हों या जो वातावरण में उपस्थित हों, उन सबके कल्याण के लिये है । यज्ञ का लाभ सबको मिले । स्वयं के लिये चाहे न भी चाहा हो तब भी उसे यज्ञ का लाभ हर हाल में मिलेगा । सब एक-दूसरे की भलाई के लिये प्रार्थना करते हैं । यही यज्ञ की उदात्त भावना है जिसमें व्यक्ति , समाज , राष्ट्र व विश्व की उन्नति छिपी हुई है । यहाँ सब अमीर-गरीब, छोटे-बड़े एक-दूसरे से स्वाभाविक रूप से सुरक्षित हो रहे हैं । इस प्रकार “स्वाहा” यज्ञ की आत्मा है और “इदन्न मम” यज्ञ का प्राण ।

मंत्रोच्चारण व मन की शुद्धि- यज्ञों में संदर्भित मंत्रोच्चारण की विधि है । मंत्रों में मानवमूल्य विचार, आत्मज्ञान, ईश्वरीय ज्ञान व सृष्टि-विज्ञान हैं । संस्कारों में प्रयुक्त मंत्रों में मानव जीवन को श्रेष्ठ, निरोग व सफल बनाने हेतु व्यावहारिक ज्ञान भरा हुआ है । इनके पठन-पाठन से मन में श्रेष्ठ विचार आते हैं जिससे मन की शुद्धि होती है । इसके अलावे ये मंत्र ध्वनियों व मात्राओं में ऐसे वैदिक छन्द-विधा से सुगठित हैं कि इनकी उच्चारण-ध्वनियों को सुनने मात्र से ही मन में शांति व पवित्रता की अनुभूति होने लगती है । मन पर उसका ऐसा अद्भुत संस्कार पड़ता है जो

हमें शुद्धता की ओर ले जाता है । फिर मंत्रार्थ और भावार्थ को जानने पर तो हमारा सीधा परमेश्वर से सम्बन्ध बन जाता है । हमारा मन पूर्णतया ईश्वरार्पित हो शुद्ध विचार-रूप आध्यात्मिक तरंगों में डूब जाता है । इससे निश्चित ही मन की हर गति साकारात्मक हो उठती है और हम श्रेष्ठ कर्मों की ओर बड़ी सहजता से आगे बढ़ने में सक्षम हो जाते हैं । इस कारण यज्ञ-विधा में मंत्रोच्चार आवश्यक है ।

हवन- स्थान व दिशा- स्नान आदि शुद्धता तो है ही, इसके साथ हवन-वेदी का स्थान भी शुद्ध व समतल हो जहाँ आराम से बैठने में याज्ञिक को सुविधा हो । घृत, सामग्री (विभिन्न औषधियों से निर्मित जो सुगन्धित, मिष्ट, पुष्ट, आरोग्यकारी आदि, समिधा (हवन में लगने वाली लकड़ी-विल्व,पीपल,आम आदि) की पूरी शुद्धता सुनिश्चित कर यजमान पूर्वाभिमुख होकर और पुरोहित/ब्रह्मा उत्तराभिमुख हो आसनसिद्ध हों और शुद्ध मन से ईश्वरार्पित भावों से ओत-प्रोत हों । ध्यान देने योग्य बात है कि संध्या (ब्रह्म-यज्ञ) में उपासक को सूर्याभिमुख बैठने व अग्निहोत्र में (देवयज्ञ व सँस्कारों में) पूर्वाभिमुख यजमान को बैठने का विधान है । अतः संध्या में प्रातः-सायं की दिशा क्रमशः पूर्व-पश्चिम होगी लेकिन हवन या सँस्कारों में यजमान की दिशा हर समय केवल पूर्वाभिमुख ही होगी ।

अग्निहोत्र-विधियों पर सामान्य चिन्तन- विभिन्न विद्वानों के भाष्यों के स्वाध्याय व चिन्तन-मनन के आधार पर यहाँ इन विधियों का भाव प्रस्तुत किया जा रहा है । शब्दशः अर्थ तो अनेक विद्वानों द्वारा किया मिलता है इस कारण यहाँ केवल भाव ही स्पष्ट करने की कोशिश की जा रही है । फिर भी महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत वेद भाष्य तथा श्रद्धेय आचार्य डॉ.

रामनाथ वेदालंकार कृत यज्ञ-मीमांसा नामक पुस्तक की सहायता विशेष रूप से ली गयी है । ये प्रकरण विस्तृत अर्थ के लिये वहाँ साभार द्रष्टव्य है ।
अस्तु --

ईश्वर-स्तुतिप्रार्थनोपासना- यज्ञार्थ आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत होना आवश्यक है । यह विधि इसके लिये अत्यन्त सहायक है । इसके लिये महर्षि दयानन्द ने वेदों के ८ महत्त्वपूर्ण मंत्र चुने हैं । इन मंत्रों का उच्चारण करते हुये याज्ञिक पूर्णतः ईश्वरार्पित हो कर शुद्ध मन हो जाता है । स्तुति से हमारे गुण-कर्म-स्वभाव उत्तम बनते हैं । इससे हमारे अन्दर यथासम्भव ईश्वरीय गुणादि का विकास होने लगता है । प्रार्थना से आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता मिलती है । सम्बन्धित कार्य को अच्छी तरह कर सकने में हम मानसिक रूप से तैयार हो जाते हैं तथा कार्य की सफलता पर सुख पाते हैं । प्रार्थना हमारे मन में विनम्रता जैसे गुण पैदा करने में अत्यन्त सहायक है । जब हम ईश्वर को सर्वोपरि मानकर प्रार्थना करते हैं तो निश्चित ही हम स्वयं को ईश्वर से छोटा मानते हैं । यही विनम्रता है जो हमें सदैव सन्मार्ग की ओर ही प्रेरित करती है । उपासना से हमारा मनात्मा आनन्द से भरने लगता है, मन अत्यन्त प्रसन्न हो उठता है जिससे आन्तरिक सुखानन्द की अनुभूति होती है और याज्ञिक स्वयं को धन्य-धन्य मानने लग जाता है । सर्वत्र वह अपने उपर ईश्वर की कृपा, अनुकम्पा व दया की अनुभूति कर ईश्वर का ऋणी हो जाता है और आजीवन ईश्वर-स्मरण, उपासना आदि आध्यात्मिक प्रक्रियाओं से जुड़कर रहता है । यह श्रेष्ठ, सफल व आनन्दमय जीवन बिताने की अचुक औषधि है ।

स्वस्तिवाचन व शांति-प्रकरण- ३१ मंत्र स्वस्तिवाचन के और २८ मंत्र शांति-प्रकरण के जो चारों वेदों से चुने हुये हैं, सुखमय व शांतमय जीवन की अपूर्व प्रेरणा के मजबूत आधार हैं । स्वस्ति=सु+ अस्ति । इस संसार में जो कुछ भी श्रेष्ठ जीवन के लिये सु= सुन्दर है, सत्य है व शिव है, वह हमें प्राप्त हो; एतदर्थ स्वस्तिवाचन के मंत्रों में प्रार्थना व तदनुकूल कार्य करने की प्रेरणा है । इसी तरह शांति-प्रकरण के २८ मंत्रों में भी मानव जीवन में शांति के पवित्र भाव भरें, मन,वुद्धि,चित्त.अहंकार अन्तःकरण-चतुष्टय में शांति व संतुलन बढ़े । शरीर के हर अंग, समाज के हर पहलु, सृष्टि के हर पदार्थ व जीवन के हर कार्य में सुखमय शांति, संतुलन, श्रेष्ठता, पवित्रता आदि गुण बने रहें; एतदर्थ प्रार्थनायें व प्रेरणायें हैं । सारी दिशायें, इनमें रहने वाले सब प्राणे व सृष्टि के सब पदार्थ हमारे लिये उपयोगी हों-ऐसा भाव है ।

ऋत्विग्-वरण- यह विधि पुरोहित वा यज्ञ के ब्रह्मा की सम्यग् नियुक्ति के लिये है । यजमान विद्वान् पुरोहित को अपने गृह यज्ञ-वेदी में बैठने का निवेदन कर संकल्पित यज्ञ/संस्कार को विधिवत् सम्पन्न करवाने की प्रार्थन करता है और तदनुकूल पुरोहित/ब्रह्मा यजमान की प्राथना स्वीकार कर यज्ञ की विधिवत् सम्पन्न करवाने की पूरी जिम्मेवारी ले आगे विधि प्रारम्भ करने में सर्वात्मना जुड़ जाता है ।

आचमन व अंग स्पर्श- आचमन दायीं अँजलि के बीच भाग में थोड़ा जल लेकर बहुत आराम से जल को पी लेना ही आचमन कहलाता है । महर्षि दयानन्द ने इसे कफ-निवृत्ति तथा शुद्धिकरण हेतु करना लिखा है । कहीं-

कहीं यह क्रिया पहले ही की जाती है, कहीं-कहीं स्तुति-प्रार्थनोपासना मंत्रोच्चारण के बाद । शुद्धिकरण की दृष्टि से पहले ही कर लेना भी उचित ही प्रतीत होता है । दूसरा भाव यह है कि स्तुति-प्रार्थना आदि के लिये अंगों की शुद्धि के वजाय मन की शुद्धि अधिक महत्त्वपूर्ण है । अग्न्याधान में हवन की वस्तुओं को छूना/पकड़ना पड़ता है अतः अंगों की शुद्धि अग्न्याधान से पूर्व करना उपयुक्त है । संस्कार-विधि के सामान्य प्रकरण में ऐसा ही क्रम लिखा है । ऋत्विग्-वरण के बाद पर अग्न्याधान से पूर्व आचमन व अंगस्पर्श का स्थान आया है । विचारगत् दोनों ही तर्क सही है । अतः इसके विवाद में न पड़कर मूल भाव शुद्धि का ध्यान रखना आवश्यक है । जहाँ जैसी परम्परा चल पड़ी है, हमें वहाँ वैसे ही ढल जाना चाहिये । इसी कारण यज्ञ-विधा को स्मार्त-विधा अर्थात् देश-काल-परिस्थिति के अनुसार थोड़ा-बहुत विधियों के क्रम में आगे-पीछे हो जाना स्वीकार्य है । आचमन में विचारें तो अमृतरूप परमात्मा को ही अपने जीवन का पूर्ण आधार माना है । उपस्तरण=ओढ़ना तथा अपस्तरण विछौना दोनों ही शरीर की रक्षा व सुख हेतु अनिवार्य है । परमात्मा भी हमारे जीवन का मानो ओढ़ना-विछौना की भाँति सब ओर से हमारी रक्षा कर हमें सुख प्रदान कर रहा है अतः आगे तीसरे आचमन में सत्य, यश, श्री के पूर्ण विकास हेतु प्रार्थना की गयी । “श्री” शब्द दो वार आया है । सत्य व यश तो सीधा अर्थ है । जीवन में सत्य का मार्ग अपनायें तो हमें यश भी मिलेगा व श्री=धन-ऐश्वर्य भी जिससे जीवन पूर्णतया शोभा (पुनः प्रयुक्त “श्री”) से भर जाता है । अंग स्पर्श में वार्यी अँजलि में थोड़ा जल लेकर दायें हाथ की अनामिका व मध्यमा ऊँगलियों से वार्यें हाथ में लिये जल को छू-छू कर दायें से वार्यें की ओर अंगों को स्पर्श करना लिखा है । अँजलि में जल रखने से शीतलता व मानसिक शांति की अनुभूति होती है । उक्त

ऊँगलिओं का का प्रयोग भी इस कारण ही होता है कि इनकी नस-नाड़ियों का सम्बन्ध सीधा हृदय से है फलतः भावनात्मकरूप से हार्दिक शुद्धता का भी अनुभव होता है । इस प्रकार मुखस्थ वाणी, दोनों नासिकायें, दोनों आंखें, दोनों कान, दोनों बाहुयें, दोनों जाँघें और फिर सारे अंगों का ध्यान कर जल से स्पर्श विधि को पूरा करते हैं । इससे एक ऐसी सर्व अंगों की पवित्रता की अनुभूति जाग जाती है जिससे सारी इन्द्रियाँ व अंग मानो सक्रिय हो शुद्ध विचार, संस्कार, प्रवृत्ति, पवित्रता आदि गुणों से भर जाते हैं । ये सब स्वस्थ रहें, क्रियाशील रहें तथा सदा सुसंस्कारित हों- यहाँ परमात्मा से यही मूल प्रार्थना के भाव निहित हैं ।

अग्न्याधान- दीपक की सहायता से कपूर-प्रज्वलन या अन्य किसी साधन से अग्नि प्रज्वलित कर हवन-कुण्ड में उसे स्थापित करने का नाम अग्न्याधान है । इस प्रकरण में चार मंत्रों से तीन अष्ट-अंगुल परिमाण की सूखी समिधायें (काष्ठ-टुकड़े) रखी जाती हैं । ब्रह्मचारी अकेला है, उसके कल्याणार्थ पहला एक मंत्र से एक समिधा, गृहस्थ में पति-पत्नी दो हैं, अतः उनके कल्याणार्थ दो मंत्रों से एक ही सम्मिलित समिधा, फिर वानप्रस्थी भी पति-पत्नी अलग या एक साथ रहते हुये भी अपना हवन अलग ही करते हैं, फलतः तीसरी एक समिधा एक ही मंत्र से उनके हितार्थ समर्पित की जाती है । यहाँ अग्नि-विधा का चिन्तन भी ग्राह्य है । ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सँन्यास को जोड़ने वाली तीन जोड़-ग्रन्थि हैं जिन्हें वैदिक सिद्धान्त में आहवनीय, गार्हस्थ व वानप्रस्थ तीन अग्नियाँ बतायी गयी है । इन्हें सदा प्रज्वलित बनाये रखने के लिये भी ये तीन समिधायें प्रेरणा के स्रोत हैं । सँन्यास को हवन आदि का बन्धन से छूट मिल जाता है क्योंकि वह स्वयं यज्ञमय होकर प्रतीकरूप से अग्नि के रंग

का गेउरिया वस्त्र धारण कर केवल ज्ञान-यज्ञ को प्रसारित करने में कर्तव्यपारायण रहता है । अतः हवन का दायित्व प्रथम तीन आश्रमवासियों का ही है. इस कारण तीन समिधायें, हवनकुण्ड की तीन मेखलायें (श्री स्टेप्स), तीन पूर्णाहुति इत्यादि त्रीतात्मक विधान मान्य है । यज्ञ-होम को “त्रीतात्मक” वा “पंचात्मक” माना गया है । इसका अर्थ है कि यह हमारा तीन या पाँच विधाओं में कल्याण करता है । यहाँ तीन के संगतिकरण में अन्य त्रीतात्मक चिन्तन भी अपेक्षित है ।

द्यूलोक,अन्तरिक्षलोक व पृथिविलोक का लाभ लेना तथा इनकी स्वच्छता का खयाल करना, ऋग्, यजुः, साम तीन वेदों से ज्ञान, कर्म, उपासना को सम्यग् जानना-इस संकल्पाग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिये, प्रकृति, जीव, ईश्वर से सम्बन्ध बनाकर सत्, चित, आनन्द को सिद्ध करने की संकल्पाग्नि को जलाने की प्रेरणा जगाना, स्तुति,प्रार्थना व उपासना-भावाग्नि को प्रदीप्त करना इत्यादि उद्देश्य स्वाभाविक ही हमारे चिंतन में आ जाते हैं ।

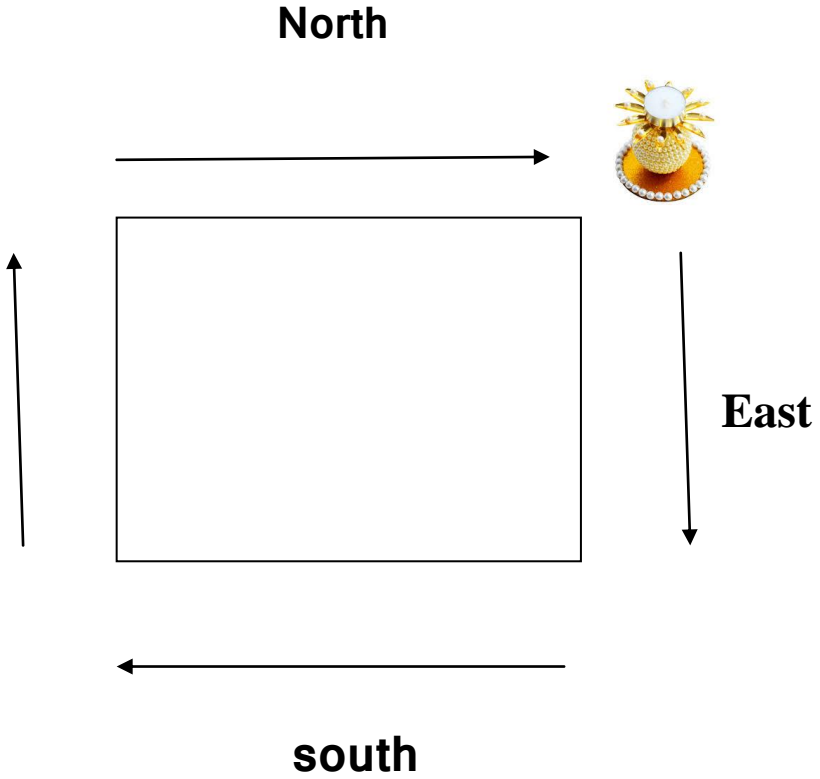
घृत-पँचाहुत्ति- एक ही मंत्र से पाँच वार मंत्रोच्चारणपूर्वक हवनाग्नि में शुद्ध घृत की आहुतियाँ दी जाती हैं । हवन-कुण्ड के चारों दिशायें व एक मध्य/बीच भाग में आहुतियाँ डालकर सब ओर से अग्नि अच्छी तरह प्रज्ज्वलित हो जाये; यह वैज्ञानिक/भौतिक अर्थ है । । इन्धन अर्थात् समिधा, घृतादि अग्नि की आत्मा है । अग्नि को ब्रह्मरूप और इन्धन को आत्मरूप मान लें तो उद्देश्य स्पष्ट है । जैसे इन्धन अग्नि में जलकर ही सुगन्धि विखेता है; सार्थक होता है ठीक वैसे ही इससे याज्ञिक की आत्मा परमेश्वर में ओत-प्रोत होता हुआ ईश्वरीय तेज से स्वयं को तेजस्वी होता हुआ अनुभव करता है । यह आध्यात्मिक अर्थ है । यहाँ पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ,

पाँचों कर्मद्वियाँ, पाँच भूत, पाँच प्राण, पाँच तन मात्रायें इत्यादि जीवन में काम आने वाले इन सब पंचात्मक तत्त्वों को सम्यग् जान इनका सप्रयोग करने की संकल्पाग्नि को जलाना और उसके तेज से स्वयं को तेजस्वी बनाने की अनुपम प्रेरणा प्रलक्षित होती है । इस मंत्र में प्रयुक्त पाँच शब्दों की ओर भी ध्यान दीजिये । यहाँ विशेषकर पाँच उपलब्धियों के लिये प्रार्थना की गयी है । १. प्रजा २. पशु ३. ब्रह्मवर्चस (ईश्वरीय कृपा, अनुकम्पा, दया आदि), ४. अन्न और ५. आदि शब्द से इनके अलावे पाँचवाँ जो कुछ भी सफल मानव जीवन के लिये आवश्यक है, वह भी ग्राह्य है । सकाम यज्ञ का यह सर्वोत्तम सार्थक चिन्तन है । इन पाँच उपलब्धियों निसंदेह मानव जीवन संतृप्त हो जाता है ।

जल-प्रोक्षण/सिंचन- इस विधि में अँजलि में जल लेकर वेदी के क्रमशः चारों दिशाओं में उसका छिड़काव करते हैं । प्रथम तो चारों ओर से कीट आदि जीवाणुओं से बचाने के लिये यह जल-छिड़काव उपयोगी है । पश्चात् इसके अध्यात्म को समझने के लिये यहाँ मुख्यतः प्रयुक्त मंत्रों में आये शब्दों पर ध्यान देना सार्थक होगा । पूर्वदिशा के छिड़काव में अदिति , पश्चिम दिशा में अनुमति, उत्तरदिशा में सरस्वती का उच्चारण व चारों दिशाओं के लिये इन सब का ध्यानपूर्वक यज्ञपति परमात्मदेव से पूर्ण लाभ हेतु प्रार्थना की गयी है । अदिति अखण्डित अमर अजर परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे इस यज्ञ का अनुमोदन कर स्वीकार करें । अदिति सूर्य रूप अखण्डित प्रकाशवाला देव ध्यानस्थ है । भौतिक रूप से सूर्य पूर्व दिशा से उदित होता है, इस कारण इससे पूर्व में छिड़काव उपयुक्त है । अनुमति से मन व बुद्धि रूप देव से कहा गया है कि इस यज्ञ को वे भी अनुमोदित करें और यज्ञ की भावनाओं को पूरा करने में हमारा मन व बुद्धि पूर्ण सहायक हों ।

मन का सम्बन्ध चन्द्रमा से है । सूर्य जब पश्चिम दिशा में जाकर अस्त हो जाता है तब रात्री आ जाती है तब चन्द्रमा प्रकट होकर अपना प्रकाश (चाँदनी/छटा) विखेरता है । इस प्रकार अनुमति का सम्बन्ध पश्चिम दिशा, रात्री, चाँद व चाँदनी से स्वाभाविक ही जुड़ जाता है अत एव इससे पश्चिम दिशा में जल-छिड़काव मान्य है । सरस्वती वाणी व विद्या का प्रतीक है । वाणी हमारे यज्ञ को अनुमोदित कर सद्विद्या की ओर हमें ले जाये । इस तरह जीवन में उत्तर (उन्नति) भाग का विकास सम्भव है । इस कारण इससे उत्तर दिशा में छिड़काव संगतियुक्त है । यजमान पूर्वाभिमुख होकर जल छोड़ता है । उसे सर्वोन्नत कोण आग्नेय कोण पर जाना है । सुविधा की दृष्टि से उसे पूर्व दिशा में उत्तर से दक्षिण व पश्चिम में जलछिड़काव करते हुये दायें से वार्यीं ओर अर्थात् दक्षिण कोण से उत्तर कोण होकर फिर उत्तर में पश्चिम से पूर्व की ओर वहाँ तक जाना जहाँ पहुँचना ध्येय है; वहीं प्रकाशमय दीपक व जलपूर्ण कलश भी रखा हुआ होता है । अग्नि को सम्यग् जलने में आक्सिजन अधिक चाहिये । छिड़के जल से तथा जरूरत के अनुसार कलश के जल से भी अग्नि जलते हुये आवश्यक ऑक्सिजन को ग्रहण कर लेती है । जल छिड़काव व जलपूर्ण कलश की स्थापना का यह भी एक वैज्ञानिक कारण है । फिर चारों दिशाओं के लिये पूर्व से पश्चिम की ओर होता हुआ उत्तर की ओर होकर फिर पूर्व की ओर बढ़ते हुये वहीं सर्वोन्नत कोण उत्तर-पूर्व का मध्य कोण तक जायें । वहीं पहुँचना सर्वविकास की सूचना है । आत्मा, मन व वाणी सब एकवुद्धि हो चलें तो जीवन आनन्द व हर्ष से भर ही जायेगा । जल-छिड़काव की दिशा निम्न रेखांकित आकार से पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगा । रेखांकित तीर की ओर छिड़काव की दिशा जानें । यह स्मरण रहे कि जल का छिड़काव की गति सदा ही यजमान की ओर से दायें से बायीं ओर ही बढ़ती है ।

यजमान पूर्वाभिमुख और ब्रह्मा/पुरोहित उत्तराभिमुख होकर क्रमशः यजमान पश्चिम में और पुरोहित दक्षिण में आसीन होते हैं ।



CELEBRATION OF REPUBLIC DAY OF INDIA

On Sunday, 31st January 2016 we celebrated 67th Republic Day of India in Arya Samaj Bhavan.

Mr. Pankaj Sharma Consul, Consul General of India, Birmingham was our chief guest.

The programme started 12pm with Indian flag hoisting by our chief guest and our Patron Mr. Gopal Chandra MBE. This was followed by singing of National anthem of India by all present.

This function was very well attended.

Mr. Shailesh Joshi, trustee of our Samaj and compere for this function, welcomed the guests. He spoke briefly about history of Constitution of India.

Mrs. Chanchal Jain and Mrs. Swaran Talwar sang patriotic songs about India.

Our priest Acharya Umesh talked about contribution of Swami Dayanand, founder of Arya Samaj, and other important Arya Samaji personalities for the independence struggle of India. About 75% of freedom fighters for independence struggle of India were from Arya Samaj background. Acharya ji also spoke about disturbing corruption and degradation of value of Sanskars in present India.

Mr. Pankaj Sharma, chief guest, spoke about historical aspect of constitution of India. He also talked about economic progress happening in India and the contribution made by Non Resident Indians in economic progress of India.

Mrs. Beauty Sinha sang three melodious patriotic songs about India.

Mr Suketu Yadav also sang another patriotic song about India. The audience highly appreciated all these melodious and very meaningful patriotic songs about India.

Towards the end Dr. Narendra Kumar, Chairman of our Arya Samaj, thanked our Chief guest Mr. Pankaj Sharma and audience for coming to Arya Samaj to celebrate 67th Republic Day of India. He told the audience that Arya Samaj movement contributed a lot for the independence of India and appealed to the politicians and public of India to value this independence and behave in a more mature and civilised way.

He also told the audience about two big projects for year 2016 for our Samaj. The first one is relocation of our present Bhavan due to HS2 project. He told the audience about working closely with HS2 management.

He also informed the parents about the progress made with DAV Primary Free School in Handsworth Birmingham. We are applying to New School Network in March 2016 followed by application to Department for Education in September 2016.

Dr. Kumar thanked Mr. Shailesh ji for presenting the programme, Acharya Umesh ji, Mrs. Chanchal Jain, Mrs. Swaran Talwar, Mrs. Beauty Sinha and Mr. Suketu and trustees for their contribution.

The function concluded with singing Arti by every one and Shanti path.

About 1.30pm Rishi Langer was served.

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org

Or

Call us on

0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays - Closed

List of Festivals for year 2016

Festival	Actual Date of Festival	Date for celebration in Arya Samaj
Republic Day of India	Tuesday 26th January	Sunday 31st January.
Rishi Bodh Utsav	Monday 7th March	Sunday 6th March
Holi	Thursday 24th March	Sunday 27th March.
Arya Samaj Foundation Day	Sunday 10th April	Sunday 10th April
Ram Navmi	Friday 15th April	Sunday 17th April.
Annual General Meeting	N/A	Sunday 31st July
Ved Katha (8 days)	N/A	From Thursday 18th August till Thursday 25th August
Raksha Bandhan	Thursday 18th August	Sunday 21st August
Independence Day of India	Monday 15th August	Sunday 21st August.
Shri Krishna Janmasthanmi	Thursday 25th August	Thursday 25th August
Special Satsang for University Students	N/A	Sunday 4th September
Gayatri Maha Yajna	N/A	Sunday 11th September
Dasahahara	Tuesday 11th October	Sunday 16th October
Diwali	Sunday 30th October	Saturday 29th October

News

Get Well Soon:

- Mr. S.P. Vohra, very important and regular and hard working member of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands, is not very well at present. He is recovering in a hospital. We wish him all the best for a speedy recovery and good health. We need him for our Samaj.

Donations to Arya Samaj West Midlands

- | | |
|--------------------|-----|
| • Mr S P Gupta | £10 |
| • Dr Gulshan Arora | £25 |
| • Mrs K Joshi | £11 |
| • Mr Paul Nischal | £71 |
| • Ms Smita Mehra | £20 |
| • Mr Handa | £51 |
| • Dr Kiran Gulia | £5 |
| • Mr Prem Nanda | £20 |
| • Dr Amitav Narula | £25 |
| • Mr Samant Narula | £25 |

Donations to Arya Samaj through Priest Services.

- | | |
|-------------------|------|
| • Mr Rajesh Kumar | £51 |
| • Mr Paul Nischal | £101 |

Thank you for all your Donations

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. 6th March 2016 – NO SHOW. Next show will be 3rd April 2016.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

**E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org**

IMPORTANT

Notices to Arya Samaj West Midlands Members

- **Dear Ordinary members of ASWM. This is a polite request to pay your annual fee of £20 membership when you receive a reminder letter from Arya Samaj Office. This money helps us to send you Aryan Voice each month. The letter will come out to members on the month they joined. From January 2016 we will have to sadly cancel the membership of those who have not paid the fee.**
- **Dear members, we are updating our email database for the membership of Arya Samaj West Midlands. We do not have email addresses of a large number of our members. In this time and age it is important to have this information. So if you have an email address please inform our office by emailing your address to enquiries@arya-samaj.org. Your cooperation will be highly appreciated.**